(2 तीमुथियुस 2:15)

जब हम बाइबल पढ़ते हैं, तो “लज्जित होना” केवल एक सामान्य भावना नहीं है—यह एक गहरा आत्मिक संकेत है। इसका मतलब होता है—पश्चाताप, शर्मिंदगी या अपराधबोध महसूस करना, खासकर तब जब हमारे कर्म परमेश्वर के सामने अस्वीकार्य, पापपूर्ण या दोहरे पाए जाते हैं।

आत्मिक रूप से देखें, तो शर्म कई बार इस बात का प्रमाण होती है कि हमने परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया है, या फिर हम लोगों और परमेश्वर के न्याय से डरते हैं।

आइए अब उस पद पर ध्यान दें जिससे यह बात आरंभ होती है:

> 📖 2 तीमुथियुस *2:15*
> “अपने आप को परमेश्वर के सामने ऐसा ठहराने का प्रयत्न कर, जो योग्य और ऐसा काम करने वाला हो, जिसे लज्जित न होना पड़े, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।” *(Hindi O.V.)*

यहाँ प्रेरित पौलुस, तीमुथियुस से कह रहे हैं कि वह अपनी सेवा और जीवन ऐसे जीए कि वह परमेश्वर के सामने स्वीकृत ठहरे।
“जिसे लज्जित न होना पड़े”—इसका मतलब है कि एक सेवक (या कोई भी

विश्वासी) यदि परमेश्वर के वचन को गलत रीति से प्रस्तुत करता है , पापपूर्ण जीवन जीता है या जो सिखाता है वो खुद नहीं जीता —तो उसे शर्म का सामना करना पड़ेगा।

एक सच्ची सेवकाई वही है जिसमें वचन बोला भी जाता है और जिया भी जाता है।

अगर कोई प्रचारक आत्म-संयम पर उपदेश दे रहा है , लेकिन स्वयं छिपकर नशे में डूबा हुआ है , तो उसका विवेक उसे लज्जित करेगा। लेकिन अगर उसका जीवन उस क्षेत्र में पवित्र और सीधा है , तो वह निडर होकर सच्चाई कह सकता है।

 जहाँ जीवन सुसमाचार के अनुरूप हो , वहाँ शर्म के लिए कोई जगह नहीं रहती।

अन्य सहायक वचन :

> 2 कुरिन्थियों *7:14*
> “क्योंकि यदि मैं ने उसके सामने तुम्हारा घमण्ड किया भी , तौभी मुझे लज्जा नहीं हुई , परन्तु जैसे हम ने तुम से सब बातें सच्ची कहीं , वैसे ही हमारे तीतुस के सामने तुम्हारा घमण्ड भी सत्य ठहरा। ” *(Hindi O.V.)*

यहाँ पौलुस बहुत प्रसन्न है कि जिन विश्वासियों पर उसे भरोसा था , उन्होंने उसे शर्मिंदा नहीं किया। जब हम वफादारी से जीते हैं , तो न केवल हम परमेश्वर का आदर करते हैं , बल्कि उन आत्मिक अगुवों का भी , जिन्होंने हमें मार्गदर्शन दिया।

> 📖 2 थिस्सलुनीकियों *3:14*
> “यदि कोई इस पत्र की बातों को न माने , तो उस पर ध्यान देना , और उससे मेल-जोल न रखना , ताकि उसे लज्जा आये।” *(Hindi O.V.)*

यहाँ लज्जा सुधार का एक साधन है। यह दण्ड के लिए नहीं , बल्कि किसी को आत्मिक रूप से जगाने के लिए है। यही मत्ती 18:15–17 में दी गई कलीसियाई अनुशासन की आत्मा है —लक्ष्य यह है कि व्यक्ति पश्चाताप करे और फिर से बहाल हो।

> 📖 अय्यूब *11:3*
> “क्या तेरी बातों से लोग चुप हो जाएंगे ? क्या तू ठट्ठा करेगा , और कोई तुझे लज्जित न करेगा ?” *(Hindi O.V.)*

जोफ़र यहाँ अय्यूब को चुनौती देता है कि जब कोई व्यक्ति अपने शब्दों में घमंड या भ्रम दिखाता है, तो उसे खुलकर टोकना ज़रूरी है —ताकि उसे एहसास हो कि उसकी बातें दूसरों को हानि पहुँचा रही हैं।

> 📖 यशायाह *50:7*
> “क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, इसलिये मैं लज्जित न होऊँगा; इसलिये मैं ने अपना मुख चट्टान सा कठोर कर लिया है, और मैं जानता हूँ कि मुझे लज्जित न होना पड़ेगा।”
> *(Hindi O.V.)*

इस पद में भविष्यवक्ता यशायाह इस आत्मविश्वास को दर्शाते हैं जो परमेश्वर में भरोसा करने से आता है। जब हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ है, तो हमें लज्जा या विरोध का डर नहीं रहता —even अगर पूरी दुनिया हमारे विरुद्ध हो।

निष्कर्ष: लज्जा और आदर की आत्मिक समझ

बाइबल के अनुसार, लज्जा सिर्फ एक भावना नहीं है —it’s a mirror. यह हमें दिखाती है कि:

1. या तो हम परमेश्वर के मार्ग से भटक गए हैं,
2. या हम उसके वचन के अनुसार दृढ़ता से जी रहे हैं।

पौलुस हमें सिखाते हैं कि यदि हम परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से समझें और उसी के अनुसार जिएं, तो हमें कभी लज्जित नहीं होना पड़ेगा (तीतुस 2:7–8)।
हमारा उद्देश्य केवल सच्चाई को जानना नहीं, बल्कि उसे जीना है —सच्चाई के साथ, नम्रता और आत्मिक साहस के साथ।

 एक सच्चा विश्वासी वह है जो परमेश्वर के सामने खड़ा होकर कह सके —मैंने तेरे वचन को जिया है, और मुझे लज्जा नहीं है।

प्रार्थना:
“हे प्रभु, मुझे ऐसा जीवन जीने की शक्ति दे, जिसमें मैं न तेरे सामने लज्जित होऊँ, न लोगों के सामने। मुझे सत्य में चलने और तेरा वचन ठीक रीति से संभालने की समझ दे। आमीन।”

Share on:
WhatsApp

Print this post